डॉ०शैलेन्द्र मोहन मिश्र
स०प्रा० मैथिली विभाग
सी०एम०जे०कॉलेज
दोनवारी हाट, खुटौना
मो०न० 9546743796
Email- mishrasm966@gmail.com
B. A. |||

काव्यक कारण (हेतु)

कविमे काव्य - सृजनक सामर्थ्य उत्पन्न करयवला साधनक नाम काव्य - हेतु थिक । काव्य हेतुक तात्पर्य एहन साधन एवं तत्व सभसँ अछि , जकरा सभक कारण काव्य रचना संभव होइत अछि । ओना काव्यक प्रेरक , हेतु आ प्रयोजन शब्द लगभग समान अछि । पाश्चात्य काव्यशास्त्रमे प्रेरक तत्व सभ पर विस्तार सँ विचार-विमर्श भेल अछि त भारतीय काव्यशास्त्रमे काव्य क हेतु आ प्रयोजन पर । मनोविश्लेषण सँ जे कारण ज्ञात होइत अछि ओ काव्यक प्रेरक अछि आ काव्यक साधक काव्य - हेतु । अतएव देखल गेल अछि जे , जे कवि काव्य सृजनक हेतु रहयवला साधन मे जतेक वेशी निष्णात होइत अछि ओकर काव्य ओतेक उत्कृष्ट होइत अछि।

संस्कृतक काव्यशास्त्री आचार्य लोकनि अपन अपन तर्कक आधार पर काव्य हेतु सभक वर्णन कएलनि अछि । एहि दृष्टि सँ भामह , दंडी , रुद्रट , कुन्तक , मम्मट , हेमचंद्र , जयदेव आदिक नाम विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि ।

संस्कृतक प्रथम आचार्य भामह काव्य हेतु मात्र प्रतिभा कें मानैत छथि -

गुरूपदेशादध्येतु शास्त्रं जड़ाधियोप्यलम ।
काव्यं तु जायते जातु कथंचित प्रतिभावतः।।

अर्थात गुरुक उपदेशसँ जड़बुद्धि सेहो शास्त्रक अध्ययन कए लैत अछि , मुदा काव्य कोनो प्रतिभाशाली कें कखनहुँ कखनहुँ स्फुरित होइत अछि । एकर बाद ओ कहैत छथि -
व्याकरण , छन्द , कोश- अर्थ , इतिहासाश्रित कथा सभ लोकव्यवहार , तर्कशास्त्र आ विविध कलाक काव्य रचना हेतु मनन करबाक चाही । शब्द आ अर्थक सम्यक ज्ञान प्राप्त कए काव्यज्ञ लोकनिक उपासना कए तथा अन्य रचना कें देखि कए काव्य - प्रणयन मे प्रवृत्त होएबाक चाही ।

एहि सँ ज्ञात होइत अछि जे भामह काव्य सृजनक हेतु प्रतिभा कें मानैत छथि , मुदा ओ प्रतिभाक संग संग काव्य कर्ताक हेतु बहुज्ञता आ अभ्यास कें आवश्यक मानलनि अछि ।
आचार्य दंडी काव्य हेतुक सम्बन्ध मे कहैत छथि-

नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुत च बहुनिर्मलम।
अमंडश्चाभियोगोस्या: कारण काव्य सम्पदः।।

पूर्व जन्मक संस्कार सँ सम्पन्न ईश्वर प्रदत्त , स्वाभाविक प्रतिभा , प्रज्ञा , विविध विशुद्ध ज्ञानसँ युक्त अनेक शास्त्रविद तथा अत्यंत दृढ़ अभ्यास काव्य - सम्पदाक कारण बनैत अछि । एहि सँ ज्ञात होइत अछि जे दंडीक अनुसार काव्यक हेतु नैसर्गिक प्रतिभा , अध्ययन एवं अभ्यास अछि।

रुद्रट शक्ति , व्युत्पत्ति आ अभ्यास कें काव्य- हेतु मानैत छथि -

तस्यासार निरासात सार ग्रहणाच्च चारुणःकरणे ।
त्रितयमिद व्याप्रियते शक्तिव्युत्पत्तिरभ्यास: ।।

वामन काव्य हेतुक लेल काव्यांग शब्दक व्यवहार कएने छथि । ओ लोक विद्या आ प्रकीर्ण कें काव्यांग मानैत छथि - " लोकोविद्या प्रकीर्णन च काव्यांगानि ।" वामन जकरा कहैत छथि ओएह अन्य अचार्यक दृष्टि मे व्युत्पत्ति अछि । लोक सँ हुनक अभिप्राय लोकव्यवहार , विद्या सँ शास्त्र ज्ञान , अभिधान , कोश , छंदशास्त्र , कला , कामशास्त्र तथा दंडनीति सँ अछि। प्रकिर्णा सँ हुनक अभिप्राय काव्य परिचय , लक्ष्यगत्व , अभियोग , वृद्ध सेवा , अवेक्षण , प्रतिभा आ अवधान सँ अछि- लक्ष्यज्ञत्वमभियोनो वृद्धसेवावेक्षणा प्रतिभानमवधाननच प्रकीर्णम ।

आनन्दवर्द्धन काव्य हेतुक रूपमे शक्ति कें विशेष महत्व देने छथि । मुदा ओ कहैत छथि जे शक्ति आ प्रतिभा काव्यक अनिवार्य हेतु त अछिए, मुदा एहि क्रममे व्युत्पत्ति सेहो आवश्यक अछि । राजशेखर सेहो समाधि एवं अभ्यास सँ उत्पन्न शक्ति कें काव्यक कारण कहैत छथि - तावुभावपि शक्तिबुदभासचयत: । सा केवलं काव्ये हेतु: । पुनः ओ कहैत छथि जे - शक्तिरकर्तृकेहि प्रतिभाव्युत्पत्ति कर्मणि । अर्थात शक्तिए प्रतिभा ओ व्युत्पत्ति कें जन्म दैत अछि ।

अचार्य मम्मट शक्ति , व्युत्पत्ति , अभ्यास कें समन्वित रूपमे काव्यक हेतु मानैत छथि -

शक्तिर्निपुणता लोककाव्य शास्त्राद्वयवेक्षणत ।
काव्यग्यशिक्षाभ्यास इति हेतुस्तदुदभवे ।।

अर्थात शक्ति (प्रतिभा) लोकव्यवहार , शास्त्र एवं काव्यादिक परिशीलन सँ प्राप्त निपुणता (व्युत्पत्ति) तथा काव्यग्य क शिक्षा सँ अभ्यास इएह सभ काव्यक उद्भव मे हेतु अछि ।

कुन्तक सेहो एहि तीनू कें काव्य हेतु मानलनि अछि -

तस्यासारनिरासात सारग्रहनाचचारूपः करणं।
तयभिद व्याप्रियते शाक्तरत्यु त्यात्तिराभ्यास: ।।

अर्थात शक्ति , व्युत्पत्ति , अभ्यास ई तीन काव्य हेतु अछि । वाग्भट्ट एहि तीनूक सम्बन्ध कें स्पष्ट करैत कहैत छथि प्रतिभा , काव्यक कारण अछि । व्युत्पत्ति विभूषण अछि आ अभ्यास ओकर सृजनकें बढबय वला अछि । एहन प्राचीन कविगणक मत अछि -

प्रतिभा कारणं तस्य व्युत्पत्तिस्तु विभूषणम।
भृशोत्पत्तिकृदभ्यास: इत्यादि कवि संकथा ।।

जयदेव सेहो एकरे समर्थन कएलनि अछि । ओ - प्रतिभैव श्रुताभ्यास: सहिता कविताम प्रति , कहि कए प्रतिभा निपुणता आ अभ्यास कें काव्यहेतु स्वीकार कएलनि अछि । जगन्नाथ कहैत छथि जे प्रतिभा मात्र काव्यक हेतु अछि । व्युत्पत्ति आ अभ्यास काव्यक कारण नहि बल्कि प्रतिभाक पोषक अछि - तस्यचकारणंकविगता केवला प्रतिभा । तस्याश्चहेतुः क्वचिददेवता महापुरुष पुसादादिज न्यमदृष्टमाक्वच्चि विलक्षण व्युत्पत्ति काव्यकारणाभ्यासौ ।

उपर्युक्त विवेचन सँ स्पष्ट होइत अछि जे काव्यक बीज हेतु प्रतिभा टा अछि । मुदा एकर संग संग शास्त्र ज्ञान आ अभ्यास आवश्यक अछि । किछु अचार्य यथा - भामह , रुद्रट , मम्मट आदि प्रतिभा , व्युत्पत्ति आ अभ्यासक मध्य उत्पाद्य - उत्पादक आ पोष्य - पोषकेक सम्बंन्ध मानैत छथि । अचार्यक दोसर वर्ग दंडी आ वामन प्रतिभा कें काव्य हेतु मानलाक संग संग ई कहैत छथि जे प्रतिभाक बिना सेहो काव्यक रचना भए सकैत अछि । मुदा वामन काव्य ज्ञानकें आ दंडी अभ्यास कें काव्य सृजनक लेल आवश्यक मानैत छथि । आनंदवर्द्धंन तथा पंडितराज जगन्नाथ प्रतिभा कें काव्य हेतु मानैत छथि ओ अभ्यास आ व्युत्पत्ति कें प्रतिभा मे समाहित कए दैत छथि । (क्रमशः)